श्री राम चन्द्र मिशन
एकोज़ इंडिया
मई २००९ | केवल निजी वितरण के लिय | भाग २,अंक ३

प्रणाम,
परमपूज्य बाबूजी महाराज का जन्मदिवस समारोह बड़ोदा एवं देशभर के अन्य केन्द्रों मे मनाया गया। यह कहना अनावश्यक है कि इस समारोह ने देशभर के अभ्यासियों की आध्यात्मिक पिपासा को सन्तुष्ट किया होगा। विसपर्स फ्राम द ब्राइटर वर्ल्ड–अ सेकेंड रिवेलेशन – एक महत्वपूर्ण पुस्तक का विमोचन मालिक का इस वर्ष का एक नवीनतम उपहार है जोकि हमारे मनन के लिये, अपने हृदय मे महसूस करने के लिये और अपने जीवन मे उतारने के लिये, ज्ञान का एक और खजाना होगा।
इस अंक में, मालिक की भारत के कई शहरों की यात्रा, विभिन्न केन्द्रों में शिक्षा कार्यक्रम, ओपन हाउस के कार्यक्रम और मूल्याधारित आध्यात्मिक शिक्षा के कार्यक्रमों का बयोरा है। 'प्रकाश के केन्द्र' में रायचुर आश्रम का वर्णन हैं।

जुलाई, २००९ के संस्करण के लिये, लेख प्राप्त करने की अन्तिम तिथि १५ जून २००९ है। कृपया समाचार–पत्र के लिये अपने लेख, कार्यक्रम की तस्वीरों के साथ अपने ज़ोनल प्रभारी के माध्यम

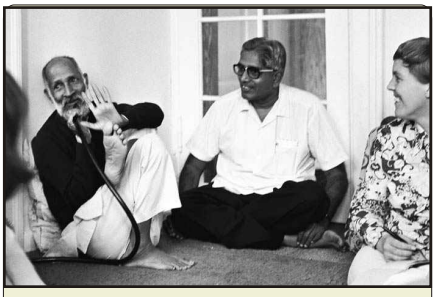

विश्व (सार्वभौमिक) प्रार्थना

हमारे मिशन में बहुत से अभ्यासियों द्वारा रात्रि ९ बजें की प्रार्थना की उपेक्षा की जाती है। यह महत्वपूर्ण है और इस प्रकार से इसकी उपेक्षा नही की जानी चाहियें। यह एक उद्देश्य को लेकर एकत्रित होने और दिलों के बीच एक स्पंदनशील स्तर पर मिलाप के लिये है, जहाँ पर साधनारत अभ्यासियों के बीच अनुकूल सामूहिक विचारों का एक समुच्चय, अर्थात एक सूक्ष्म मानसिक जुड़ाव निर्मित हो जाता है। प्रतिदिन की जाने वाली इस प्रार्थना की उपेक्षा नही की जानी है। केवल इसे करने की माँग करना क्या बहुत अधिक है? इसके प्रति सचेत होना सबके लिये बुद्धिमानी की बात होगी। कुछ क्षणों के लिये अपने अंत:करण में उतरना और विचार को समेटना ही हमारे मिशन, अर्थात हमारे सभी भाई बहनों का जिन्होंने अपने दिव्य मालिक का अनुसरण करने का निर्णय लिया है, भला कर सकता है। सभी लोगों की भलाई के लिये बुद्धिमान लोग इसे याद रखें।
–बाबूजी महाराज।

मालिक का दौरा

कोलकता

जनवरी और फ़रवरी के, उत्तर भारत के व्यस्त दौरे के बाद मालिक, इन्दौर से मुम्बई होते हुए २० फ़रवरी को कोलकता पहुँचें। मालिक काफ़ी थके हुये व अस्वस्थ दिख रहे थे। उन्होंने भाई अजय भट्टर के निवास–स्थान 'डिवाइन ब्लिस' में विश्राम किया। अगला दिन उन्होंने काफ़ी समय तक कम्पयुटर पर काम करके बिताया जिसे देखकर आश्चर्य होता है कि कैसे इस उम्र में भी वह इतने लम्बे समय तक काम कर सकते हैं। २२ तारीख को मालिक क्रेस्ट (सेन्टर फ़ार रिसर्च, साधना एंड ट्रेनिंग, पहला बंगलोर में पहले से ही कार्यरत है) के निर्माण के निरीक्षण के लिये खड़गपुर गये। वहाँ पर सतसंग कराने के बाद वह कोलकता के लिये रवाना हुयें।

चेन्नई

मालिक, अपनी लम्बी उत्तर–भारत की यात्रा के पश्चात चेन्नई में रहें। मालिक ने पहले ही विसपर्स फ्राम द ब्राइटर वर्ल्ड– अ सेकेंड रिवेलेशन के ३० अप्रैल को विमोचन की घोषणा सतखोल में की थी। १ मार्च को फ़िर से मालिक ने अपनी एक वार्ता में कहा कि यह पुस्तकें सहज मार्ग की बाइबिल बनेगीं। यदि आपने भाग एक को उतने ध्यान से पढ़ा है जितने ध्यान से इसे पढ़ा जाना चाहियें। यह सन्देश इस दुनिया के बाहर के हैं। इसीलिये, यह श्रुति कहलाने योग्य हो जाते हैं। श्रुति का अर्थ है प्रकट किया गया ज्ञान – न कि सुना हुआ ज्ञान, ऐसा ज्ञान जो विचार में न आया हो, जो बौद्धिक न हो, न ही इसके लेखन का श्रेय किसी व्यक्ति को जाता हो। बाबुजी एक मानव थे; वह दिव्य हैं। .... इसके लिये आपको जो भी खर्च करना पड़े, उसकी तरफ़ मत देखियें। अभ्यासियों के साथ अनौपचारिक वार्तालाप में भी उनकी चिन्ता व इच्छा साफ़ ज़ाहिर हो रही थी कि उनके मालिक से आये सन्देश हर एक तक पहुँचने चाहियें। वह नही चाहते कि इस पुस्तक से एक भी अभ्यासी वंचित रहे और उन्होंने यह भी कहा कि यह धन का सदुपयोग होगा। उन्होंने बताया कि यह उन बहुत ही कम अवसरों मे से एक है जब उन्होनें सत्संग से पहले वार्ता दी है।

पुणें

मालिक १२ मार्च को पुणें पहुँचें जहाँ हवाईअड्डे पर बहुत से अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया। अगले कुछ दिनों में महाराष्ट्र के विभिन्न केन्द्रों से लगभग १७०० अभ्यासी पनशेट के रिट्रीट सेन्टर पर पहुँचें। १३ तारीख को मालिक ने सतसंग करवाया जिसके बाद कुछ भजन गाये गये। १४ तारीख का दिन अभ्यासियों ने ध्यान करते हुये, अपने अनुभव बाँटते हुये व मालिक की डी वी डी व वी सी डी देखते हुये व्यतीत किया। १५ तरीख को मालिक ने अपने एक भाषण मे कहा कि मुझें डर है कि हमारे आश्रम ज्यादा से ज्यादा ऐसे जनसामूहिक स्थल बन रहे है जहाँ हमारे पास अनुकूल साथ, मित्रता, बैठने और बातें करने तथा गपशप करने का अवसर हैं– और कम से कम समय, सहज मार्ग में, अभ्यास या सिद्धान्त पर दिया जा रहा है।
अपनी वार्ता के बाद उन्होंने बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम देखा। और लगभग ढ़ाई बजे उन्होनें रिट्रीट सेन्टर से प्रस्थान किया। उन्होंने अपनी इस यात्रा के दौरान कुछ एक प्रशिक्षक बनाये तथा काफ़ी सारे अभ्यासियों से मिलें।

श्री राम चन्द्र मिशन
एकोज़ इंडिया
मालिक का दौरा
मई २००९ केवल निजी वितरण के लिय भाग २,अंक ३

पनवेल/ मुम्बई

गुरुदेव, 15 मार्च को पनवेल आश्रम पहुँचें जहाँ युवा बहनों ने पारंपरिक वेशभूषा में उनका स्वागत किया। यात्रा की थकावट के बावजूद, शाम 5 बजें उन्होंने मुम्बई और निकटवर्ती केंद्रों से आये करीब 1000 अभ्यासियों को सिटिंग दी। सत्संग के बाद वह छत पर टहले और ऊपर से हरे–भरे क्षेत्र के दृश्यावलोकन का आनंद लिया। बाद में, पूनम की रात में, उन्होंने कुछ समय छत पर अभ्यासियों के साथ बिताया।

16 मार्च को प्रातः 5.45 बजे गुरुदेव, छत पर टहलने के लिये गये और अभ्यासियों के साथ काँफी पी। सुबह 9 बजे के सत्संग के बाद भजन गाये गये। दोपहर के पहले, गुरुदेव ने हरे–भरे क्षेत्र में आम के पेड़ के तले विश्राम किया। एक अभ्यासी ने रास्ते में आम की टहनी को उठा रखा था जिससे गुरुदेव नीचे से आराम से गुजर सकें। गुरुदेव ने कहा, उठाओ नही, छोड़ दो। यह बहुत नाज़ुक है। हमें प्रकृति के सामने सिर झुकाना सीखना चाहियें । स्त्रियों की दुर्दशा पर बात करते हुए उन्होंने कहा, स्त्रियों की जिन्दगी, विशेषकर भारत में, जन्म से मृत्यु तक दुखों से भरी हुई है क्योंकि वे आश्रित हैं। हरे–भरे क्षेत्र से लौटते समय उन्होंने, बच्चों के अनुशासन की प्रशंसा की और प्रत्येक बच्चे को चौकलेट दी।

एक डाक्टर के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा, अगर आप सतत–स्मरण में काम कर रहे है तो फल लाख गुणा बेहतर होगा। गुरुदेव ने कहा कि 99.9% प्रश्न इच्छाजनित होते हैं और उन्होंने, एकअभ्यासी के द्वारा किये गये प्रश्न पर बाबूजी के एक जवाब का हवाला देते हुए कहा, सही काम के लिये आपको मेरी आज्ञा की जरुरत नही है और गलत काम की मैं आज्ञा नही दूँगा।

रात्रि के भोजन के बाद, गुरुदेव ने आश्रम की छत पर एक सिनेमा देखा। सामान्यतः, अभ्यासियों ने काफी अच्छा अनुशासन बनाये रखा, जिसे गुरुदेव ने अपनी काँटेज से बाहर काफ़ी समय बिता कर अभ्यासियों को पुरुस्कृत किया। यह सभी अभ्यासियों के लिये सीखने लायक अनुभव था कि वे उन्हें स्वतन्त्रता दें, स्वयं पर अनुशासन बनायें रखें, ताकि वह, मालिक की इच्छानुसार, उनके सामीप्य का आनंद उठा सके।

रायपुर

17 मार्च को गुरुदेव, छत्तीसगढ़ जिले के रायपुर शहर में पहुँचें और सत्संग के स्थल पर एकत्रित करीब 1200 अभ्यासियों को पूजा दी। गुरुदेव ने कहा, एक चीज विश्व–शान्ति, सामन्जस्य, शांतिपूर्ण–अस्तित्व, सामन्जस्यपूर्ण–अस्तित्व, खुशनुमा–अस्तित्व से सम्बंधित बहुत जरुरी है। बाबूजी ने जोर दिया है कि जब तक हम 9.00 बजे की सार्वभौमिक प्रार्थना नही करेंगें, मानवता को जोड़ने की आशा कभी पूरी नही होगी।

18 तारीख की सुबह वे अमलेश्वर पहँचें जहाँ मिशन की 6.5 एकड़ जमीन है। वहाँ उन्होंने पूजा कराई और ध्यान–कक्ष का शिलान्यास किया। इस अवसर पर बोलते हुये उन्होंने कहा, मैने सहज मार्ग आध्यात्मिक वंशानुक्रम (हाइरार्की) के सभी मालिकों के आगमन को मिशन के एक और आश्रम की बुनियाद के पत्थर को उनकी उपस्थिति में उनके आशीर्वाद से, उनके प्यार के साथ, रखते हुये उनके देखने को महसूस किया है।

19 तारीख को उन्होंने सुबह 9 बजे की पूजा कराई। बच्चों ने कुछ छोटी–छोटी वस्तुयें विक्रय के लिये बनाई थी और इससे जमा धनराशि को अपने जेबखर्च के साथ मिलाकर उन्होंने, मालिक को आश्रम–निर्माण के लिये भेंट की। गुरुदेव ने प्रसन्नता से उसे स्वीकार किया और कहा कि अगर बड़े भी ग़ैरज़रुरी खर्चो में कमी करें तो धन को बेहतर काम में लगाया जा सकता है। जहाँ वे ठहरे हुए थे वहाँ उन्होंने शाम को पूजा दी और कोलकता के लिये रवाना हो गयें।

कोलकता

20 तारीख की सुबह को गुरुदेव, कोलकता पहुँचे। और अगले दिन वे ध्यान–कक्ष में समय से पहले पहुँच गयें और ध्यान कराया। उन्होंने इस बात पर ख़ेद प्रकट किया कि लोग उनके पास आध्यात्मिकता के बजाय भौतिक–कल्याण के लिये आते हैं।

बाबूजी ने कहा था, तुम जैसे लोग, शायद कुछ ही हैं, दो या तीन, तुम आगे बढ़ते जाओगे क्योंकि तुम्हारे दिल में, मैं हूँ। लेकिन बाकी हमारे अभ्यासी भाई–लोग मेरे बारें में बिल्कुल नही सोचते। वे मेरे पास सिर्फ़ लेने आते हैं। निरन्तर वे सिर्फ़ लेना चाहते हैं। यदि वे ले सके तो मैं उन्हें पूरा ब्रह्माण्ड देने का इच्छुक हूँ, मगर वे ठीक तरह से ध्यान करें और मैं यह एक सिटिंग में कर सकता हूँ। पर वे मेरे पास सिर्फ़ अपनी परेशानी, अपनी बीमारी और मेरे प्रति अपनी नाराजगी लेकर आते हैं।

आप देखिये? यह उनके लिये चरम निराशा का क्षण था – कि कैसे वे दिव्य लोक में अपने मालिक का सामना करेंगें। क्योंकि अनुशासित होने के बजाय, तमाम गैर–आध्यात्मिक आग्रहों को जिनको मना कर देना या ठुकरा देना चाहियें था, स्वीकार कर लिया, उन्होंने हर चीज के लिये हाँ कहा। 23 मार्च को गुरुदेव ने चेन्नई के लिये प्रस्थान किया।

विशाखापट्टनम, आन्ध्रप्रदेश

गुरुदेव 25 मार्च को चेन्नई से विशाखापट्टनम पहुँचे। उन्होंने 6 साल के बाद इस केन्द्र का दौरा किया। हवाई अड्डे पर 150 अभ्यासियों ने शांतिपूर्वक, पथ पर खड़े रहकर मालिक का स्वागत किया। गुरुदेव ने आश्रम के पास गेस्ट हाउस मे दोपहर का भोजन करने के बाद थोड़ा आराम किया। उन्होंने सहज मार्ग स्प्रीचुएलिटी फ़ाउन्डेशन के नाम 9.09 एकड़ जमीन रजिस्ट्री कराई। विशाखापट्टनम से 25 कि.मी. दूर यहाँ पर अभ्यासियों के लिये एक कॉलोनी बनाने की योजना है। शाम 4.30 बजे गुरुदेव ने आश्रम मे एकत्रित लगभग 3000 अभ्यासियों को पूजा कराई। सत्संग के बाद उन्होंने एक वार्ता दी जिसमें उन्होंने बाबूजी के एक सन्देश का हवाला देते हुये कहा कि सहज मार्ग का अभ्यास अपने आप में सम्पूर्ण है और इसमें किसी भी चीज के जोड़ने या हटाने की आवश्यकता नही है। उन्होंने अभ्यासियों को समझाया कि वे अपने आप को पुरानी धार्मिक प्रथाओं से मुक्त करें और उन्हें बेहतर बनाने के लिये, सहज मार्ग को उनके अन्दर परिवर्तन करने का मौका दें। गुरुदेव ने शहर से दूर एक फार्म हाउस में रात बिताई और 26 मार्च को प्रातः 10 बजे चेन्नई वापस लौट गये।

गुरुदेव 5 अप्रैल को तिरुची पहुँचे। वहाँ हवाई अड्डे पर विभिन्न केन्द्रों से आये 300 अभ्यासी गुरुदेव का इन्तज़ार कर रहे थे। गुरुदेव उन सब को वहाँ देख कर काफी खुश थे और वहाँ से सीधे जानकी फार्म को रवाना हुए। वे वहाँ पर एक हफ्ते तक रहे और 12 अप्रैल को तिरुची ध्यान कक्ष में सवेरे 7.30 बजे ध्यान कराया और वहाँ से डिंडिगुल होते हुए तिरुपुर के लिये रवाना हो गये।

रास्ते में डिंडिगुल नाम के स्थान पर, मालिक ने आधे घन्टे के लिये एक अभ्यासी के घर मे पड़ाव डाला जहाँ वे सवेरे 11.00 बजे पहुँचें। डिंडिगुल, चिनलपत्ती और बट्लागुन्डू से आये अभ्यासियों ने हर्ष के साथ गुरुदेव का स्वागत किया।

गुरुदेव चिन्नलपट्टी केन्द्र के अभ्यासियों से मिल कर अतयन्त खुश हुए, इस केन्द्र को उन्होंने 40 साल पहले शुरू किया था और जो कुछ ही महीनों पहले पुनर्जीवित हुआ है।

रास्ते मे गुरुदेव धारापुरम मे 125 अभ्यासियों के समूह से मिलने के लिये रुके। गुरुदेव दोपहर करीब 1.30 बजे तिरुपुर पहुँचें। वे काफी थके हुए थे और दोपहर के खाने के लिये उन्हें काफी देर हो चुकी थी। जब एक अभ्यासी ने इतनी गर्मी में इतने लम्बे सफर के बारें में चिन्ता ज़ाहिर की तो गुरुदेव ने जवाब दिया, "जब हम खुश होते हैं तो खानें और आराम के अभाव के बारें में नही सोचते।"

सोमवार को विभिन्न केन्द्रों से लगभग 2500 अभ्यासी तिरुपुर के डायमन्ड जुबली पार्क में एकत्रित हुए जिसमे केरल से आये अभ्यासी भी शामिल थे। गुरुदेव ने लगभग रोज ध्यान कराया।

बुधवार, 15 अप्रैल को गुरुदेव उदमलपेट पहुँचें और प्रस्तावित ध्यान कक्ष का शिलान्यास किया। यह एक छोटा शहर है जहाँ सहज मार्ग पिछले दो दशको से बढ़ रहा है। एक अभ्यासी के प्रश्न पर गुरुदेव ने कहा कि वे अपने पेशे के सिलसिले मे इस शहर मे कई बार आ चुके है जब वे टी.टी.के. ग्रुप की कम्पनी में काम करते थे।

यह जाहिर है कि गुरुदेव जहाँ भी गये थे वहाँ अब केंद्र और केन्द्र प्रभारी हैं।

तिरुपुर में गुरुदेव ने दो वार्ताओं को रिकार्ड किया जो इस साल निकलने वाली नयी डी.वी.डी. की वार्ताओं में शामिल होगी।

गुरुदेव 18 अप्रैल, शनिवार को प्रातः 10.30 बजे कृष्णगिरि के लिये रवाना हुए और दोपहर का भोजन उन्होंने एरोड में किया। वे कृष्णगिरी शाम को 4.30 बजे पहुँचें। अगली सुबह उन्होंने ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया और वहाँ एकत्रित 800 अभ्यासियों के समूह को वार्ता दी।

बंगलोर

गुरुदेव रविवार 19 अप्रैल को कृष्णगिरी से बंगलोर के परमधाम आश्रम में पहुँचें। परमधाम एक आवासीय इलाके में स्थित है अतः केंद्र–संचालकों ने बंगलोर के विभिन्न भागों एवं कर्नाटक के अन्य केंद्रों के अभ्यासियों के लिये आश्रम आने की व्यवस्था अलग–अलग दिन की थी।

20 तारीख को गुरुदेव ने 5 विवाह करवाये। वे खुश और स्वस्थ लग रहे थें। तिरुपुर की तरह ही वे अपनी वार्ताओ की वीडियो रिकार्डिंग मे व्यस्त रहें। उन्होंने परमधाम के लगभग सभी कमरों का मुआयना किया जिससे निवासियों को बड़ी खुशी मिली।

नये प्रकाशन

ऋतवाणी (मराठी)

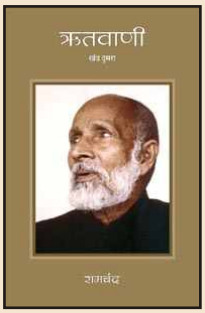

यह पुस्तक मूलतः 1981 में प्रकाशित हुई थी इसमें बाबूजी महाराज की वार्ताओं, लेखों और पत्राचारों का संग्रह है। पूज्य राम चन्द्रजी ने आध्यात्म के अपने अंतरंग ज्ञान की व्याख्या की है जैसा उन्होंने अपने निकट सहयोगियों और साथ ही साथ जनसाधारण को बताया है।

सहज मार्ग विवरणिका

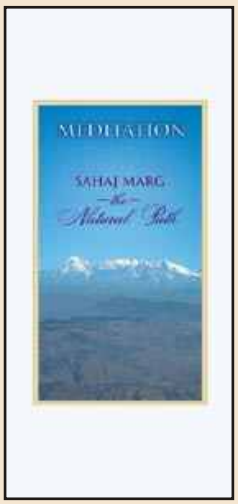

यह विवरणिका, आध्यात्मिक आकांक्षियों के लिये सहज मार्ग ध्यान और साधना की पद्दति के सरल परिचय देने का काम करेगी। यह मानक परिचयात्मक सामग्री है जो सभी सम्भावी आकांक्षियों के लिये बनाई गई है जो सहज मार्ग से जुड़ना चाहते हैं। यह सहज मार्ग पद्धति की मुख्य विशेषताओं के अलावा स्थानीय संपर्क जानकारी भी प्रदान करती है। इसे सहज मार्ग सूचनात्मक सत्र में वितरित किया जा सकता है। यह विवरणिका पहले ही अंग्रेजी मे विमोचित हो चुकी है और अब हिन्दी, तमिल, तेलगु, कन्नड, बंगाली और आसामी में मई 2009 मे विमोचित होगी।

कॉंसटेंट रिमेमब्रेन्स अप्रैल 2009

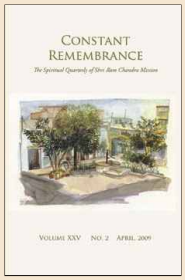

इसमें– 'स्वयं में बदलाव लाकर विश्व को कैसे बदलें' पर गुरुदेव का भाषण; पी.आर. कृष्णा का रिश्तों पर व विषय अनुभाग में कृतज्ञता पर एक लेख शामिल हैं। 'विश्व भर में सहज मार्ग' में मध्य प्रदेश के भोपाल आश्रम और मलमपुझा, केरल में रिट्रीट सेंटर के उद्घाटन पर लेख हैं।

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम हिन्दी में

साधना प्रशिक्षण कार्यक्रम शाहजँहापुर आश्रम में माह के हर दूसरे हफ़्ते में आयोजित किया जाता है। प्रशिक्षण, मंगलवार को शाम 4.00 बजे शुरू होकर रविवार दोपहर 12.30 तक चलता है।

आगामी कार्यक्रमों का बयोरा

1. 7 12 जुलाई 2009
2. 3 9 अगस्त 2009
3. 8 13 सितंबर 2009
4. 6 11 अक्टूबर 2009

कृपया आवेदन भेजें : प्रभात कुमार
डाक घर बाँके गंज, जिला लखीमपुर खीरी (पिन 262801)
ई–मेल prabhatksrcm@gmail.com

घोषणाये

प्रिय गुरुदेव के 83बें जन्मदिन का समारोह

जुलाई 23 से 25, 2009, तिरुपुर, भारत

आशा और अवसर का एक युग

"..... अपने आप को जन्मदिन समारोह के लिये तैयार कीजिए; यह मेरे पुत्र को एक बार फिर दर्शायेगा कि हमारे भाईयों और बहनों के ह्दय में साल दर साल उसका महत्व बढ़ता जा रहा है। उसे प्रेम किया जाता है और उसके कार्य हमारी आशाओं के ज्यादा फलित होते हैं। ईश्वर करे कि पृथ्वी पर उसके जन्म का यह मुबारक दिन मिशन के इतिहास में यादगार घटना बनें। यह इसे आलोकित करता है और विश्वसनीयता प्रदान करता है। एक बार फिर इस अवतार में प्रसन्न रहो इस विलक्षण जीवन के परिपेक्ष में स्वतः उपस्थित रहते हुये....."

बाबूजी महाराज, विसपर्स फ्रोम द बाईटर वर्ल्ड

हम काफी खुश और आभारी है कि गुरुदेव ने उनका 83वां जन्मदिन तिरुपुर, भारत में मनाने की अनुमति दे दी है। निमन्त्रण को मिशन की वेबसाईट पर देखा जा सकता है:
http://www.srcm.org/members/24july2009/index.jsp.
उत्सव की नवीनतम सूचना, रजिस्ट्रेशन एवं कम्फर्ट डार्म आदि की जानकारी सहित यहाँ मिल सकती है। अभ्यासियों से अनुरोध है कि वे 15 जून 2009 तक अपना पंजीकरण करवा लें। स्पष्टीकरण के लिये उत्सव समन्वयक से संपर्क करें: 24july.helpdesk@srcm.org.

एस.एम.आर.टी.आई. कार्यकर्ता

सहज मार्ग रिसर्च एंड ट्रेनिंग इन्स्टीटूट एस.एम.एस.एफ़. के अनुसन्धान और प्रशिक्षण की शाखा के रुप में स्थापित हुआ था। निम्नलिखित कार्यो के लिए नियुक्त व्यक्तियों के नाम इस प्रकार हैं:

डा. के.एस.बालसुब्रमनयम निर्देशक, अनुसन्धान
(sanksritkannan@yahoo.com)

प्रशिक्षण सामग्री विकसन – ललिता श्रीनिवासन

छात्रवृत्ति प्रशिक्षण डॉली निकोलाई

प्रभारी प्रशिक्षण कार्यक्रम एन. प्रकाश

एन. पद्मनाभन (padu@srcm.org) निर्देशक, संचालन, भारत

युवा कार्यक्रम (ए. एम. सी. प्रशिक्षण)
एस. प्रकाश

बाल प्रशिक्षण कार्यक्रम
वी. मधुमिता एवं लीह रिच

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम (प्रवेश)
कर्नल. ए. रामाकृष्णन

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम (नियमित)
अनसुय्या रामाचन्द्रन

मूल्य आधारित अध्यात्मिक प्रशिक्षण
सीता कुंचितपादम एवं रंगराजू माधुरी

निबंध प्रतियोगिता
पुनित लालभाई, ललिता राजगोपाल एवं मिसल मेहता

अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम
लिज़ किंग्स्नौर्थ

सतकोल केन्द्र ने १५ से १७ जनवरी तक तीन दिन का एक वी बी एस ई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका उद्देश्य उत्तराखन्ड क्षेत्र के शिक्षकों को प्रशिक्षित करना था। कार्यक्रम में भाग लेने वाले लगभग चालीस अभ्यासियों ने विभिन्न मूल्यों पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार किये और श्रोताओं के सामने प्रस्तुत किये। उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि किस तरह से इन मूल्यों को अपनी दिनचर्या में लाया जा सकता है। उन्होंने इन मूल्यों के प्रभाव को प्रमाणित करने के लिये अनेक कहानियाँ, गतिविधियाँ, खेल और प्रयोगों आदि का सहारा लिया। कार्यक्रम में वी बी एस ई के पाठ्यक्रम को सीखने के लिये व्यावहारिक दृष्टिकोण शामिल था।

रोचक यात्रा

५ जनवरी २००९ को एलियेन्ट विश्वविद्यालय, कैलीफोर्निया, अमेरिका से मनोविज्ञान के विद्यार्थियों का एक समूह बाबूजी मेमोरिअल आश्रम, मणपाक्कम आया। यह यात्रा सहज मार्ग के बारे में और अधिक जानकारी हासिल करने और व्यावहारिक मनोविज्ञान पर इसके प्रभाव को जानने के लिये उनके पाठ्यक्रम का एक हिस्सा थी। पहले विद्यार्थियों को हमारा सुन्दर आश्रम और एल एम ओ आई एस (लालाजी मेमोरियल ओमेगा) केम्ब्रिज अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल दिखाया गया । उनके अनेकों प्रश्नों के जवाब, आश्रम दिखाने वाले अभ्यासियों ने दिये। उनका भाई ए पी दुरई के साथ एक वार्तालाप सत्र हुआ जिसमें उन्होंने सहज मार्ग पर, विचारों को उकसाने वाली एक वार्ता दी और बताया कि किस तरह से यह मनोविज्ञान के विद्यार्थियों के लिये लाभदायक हो सकता है। सभी मेहमानों के लिये दोपहर के भोजन की व्यवस्था थी। उन्होंने आश्रम में बहुत ही अच्छा समय व्यतीत किया और लम्बे समय तक रुकने की इच्छा व्यक्त की।

एम. बी. ए. के विद्यार्थियों की मणपाक्कम यात्रा

१८ मार्च को आई एस बी आर स्कूल ऑफ बिजेनस, तोराइपाक्कम, चेन्नई से ६० विद्यार्थी अपने प्रधानाध्यापक सत्यप्रिय और तीन प्रशिक्षकों के साथ बाबूजी मेमोरिअल आश्रम, मणपाक्कम आयें। उनके लिये एक सत्र का आयोजन किया गया और भाई ए पी दुरई ने स्वयं–संचालन, आचार–नीति और सदाचार, गुरु की आवश्यकता और सहज मार्ग साधना जैसे विषयों पर मालिक का सन्देश एक वार्ता द्वारा उन तक पहुँचाया। विद्यार्थी पूरी तरह से लीन प्रतीत हो रहे थे और बाद में प्रश्नोत्तर सत्र में उन्होंने अपनी सोच को व्यक्त किया। विद्यार्थियों ने कार्यक्रम की सकारात्मक प्रतिपुष्टी की और प्रशंसा भी की। प्रधानाध्यापक और अन्य प्रशिक्षकों ने साधना शुरू की। सभी को कैन्टीन में साधारण और स्वादिष्ट भोजन कराया गया। सभी बुनियादी छोटी पुस्तकें प्रदान की गयी और जरुरत पडने पर आगे भी मदद का भरोसा दिया गया।

मूल्य आधारित शिक्षण कार्यक्रम (वी बी एस ई)

थेनी, तमिलनाडु में नादर सरस्वती कालेज ऑफ आर्ट्स एन्ड साइंस में तीन दिन के लिये वी बी एस ई के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बहन सीता कुंचितपादम (स्मृति की सह– संचालिका) ने कोयम्बटूर की बहन सुब्बुलक्ष्मी के साथ मिलकर इस कार्यक्रम का संचालन किया। विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किये गये विषयों में मूल्य आधारित जीवन, चरित्र और व्यवहार, तनाव संचालन, संकल्प और दृढता, मूल्य क्या हैं, नेतृत्व के गुण और मनुष्य जीवन का ध्येय शामिल थे। बी एड के विद्यार्थियों के लिये अतिरिक्त शामिल किये गये विषय– अध्यापकों की भूमिका और तनाव संचालन थे। प्राध्यापकों के लिये शामिल विषय थे– अध्यापक प्रशिक्षक की भूमिका, अध्यापक की भूमिका, कैसे मूल्यों का अभ्यास होना चाहियें, तनाव संचालन, विश्रान्ति, ध्यान और चरित्र निर्माण।

हालांकि कार्यक्रम केवल आध्यापकों और विद्यार्थियों के लिये था परन्तु ड्राइवरों, परिचारको, गैर– शैक्षिक कर्मचारियों को भी एक विशेष सत्र में शामिल कर लिया गया था। इसकी शुरुआत उनके प्रत्यक्ष प्रतिरोध से हुई। लेकिन, अन्त में उनमें से काफी लोग इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित थे। ड्राइवरों और गैर–शैक्षिक कर्मचारियों के लिये विषय थे–लड़कियों के विद्यालयों में पुरुष ड्राइवरों की भूमिका, जीवन के लिये मूल्य। कार्यक्रम के दौरान व्यावहारिक सत्र व अनेक गतिविधियाँ थी जो सबके लिये एक नया अनुभव था और इसे काफ़ी सराहा गया।

वी बी एस ई प्रशिक्षकों के लिये शिक्षण कार्यक्रम, बैंगलोर

२८ और २९ मार्च को बैंगलोर के बनशंकरी आश्रम में दो दिन के प्रशिक्षक विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। लगभग २४ अभ्यासियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। पहले आधे दिन सभी ने मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा के महत्व पर जोर दिया। बाकी का कार्यक्रम वी बी एस ई के गहन पक्ष तथा सहज मार्ग की शिक्षा के संचार हेतु, जनसमूह में बोलने की क्षमता का निर्माण करने पर आधारित था। कार्यक्रम में स्वयंसेवी कार्य का महत्व, स्वयंसेवकों का नज़रिया और प्रभावी वक्तृत्व कला जैसे विषय शामिल थे। प्रत्येक प्रत्याशी को एक प्रस्तुति देने के लिये कहा गया और जनसमूह में बोलने की कला में निपुण, अनुभवी अभ्यासियों ने इस कार्य में प्रत्याशियों की मदद की। इसके परिमाणस्वरुप प्रत्येक प्रत्याशी को आने वाले वर्ष में कम से कम पाँच कार्यक्रमों का संचालन करने की जिम्मेंदारी लेने के लिये कहा गया।

प्रशिक्षको के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम, मलमपुझा

१४ और १५ मार्च २००९ को केरल के मलमपुझा रिट्रीट सेन्टर में प्रशिक्षकों के लिये अत्यन्त प्रभावशाली प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तमिलनाडु और आसपास के ग्रामीण केन्द्रों, जैसे वेल्लुर, अर्नि, पाँडिचेरी, विझुपुरम, होसुर, कृष्णागिरि, धर्मपुरी, हरूर, तिरुची, और करूर से लगभग ३७ प्रशिक्षकों ने हिस्सा लिया। निम्नलिखित विषयों पर बातों के आदान–प्रदान के साथ विभिन्न तथ्यों पर प्रस्तुति दी गई जिसमें ज्यादातर तथ्य सत्य का उदय, प्रीसेप्टर गाईड और विसपर्स फ्राम द ब्राइटर वर्ल्ड आदि से लिये गये थे।

सहज मार्ग के सिद्धान्त और साधना– राजेश राठोड
प्रशिक्षक की भूमिका, जिम्मेदारी एवमं कार्य– एन प्रकाश
विसपर्स फ्राम द ब्राइटर वर्ल्ड (अ डिवाइन रिवेलेशन)– बी जी प्रसन्ना कृष्णा
प्रशिक्षक का कार्य, स्पष्टीकरण– जी राजवेल
सहज मार्ग परिवार– एझिलरसी
समापन सन्देश– कामाक्षी नटराजन

भाई सी राजगोपालन, उत्तर तमिलनाडु के ज़ोनल प्रभारी इस कार्यक्रम के समीक्षक थे और उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर इसमें अपना बहुमूल्य योगदान दिया। कार्यक्रम में स्वयं के अन्दर परिवर्तन लाने पर बल दिया गया और इस तरह हम, दूसरों में उनके अन्दर परिवर्तन लाने में सहायक हो सकते हैं। इस बात को लेकर पूर्ण सहमति थी कि यदि हम अपने अन्दर आवश्यक परिवर्तन लाने के लिये अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करें और अपना कार्य सही तरीके से करें तो यह निश्चित रुप से हमारे प्रिय मालिक को प्रसन्न करेगा।

भोपाल केन्द ने ५ अप्रैल को एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जहाँ इन्दौर की आश्रम संरक्षण समिति ने भोपाल के अभ्यासियों के साथ अपने अनुभव बाँटे। दो वर्ष पहले मालिक ने आश्रम की संपत्ति को सम्भालनें के लिये आश्रम संरक्षण समिति का गठन किया था। यह समिति पाँच सदस्यों से मिलकर बनी है, जिसमें क्षेत्र प्रभारी, केन्द्र प्रभारी, और आश्रम संचालक (मेनेजर) समिति के सदस्य हैं। अभ्यासियों को इस समिति के बारे में कोई जानकारी नहीं थी इसलिये इस कार्यक्रम के द्वारा इस समिति का परिचय देने और आश्रम के व्यवस्थापन के कार्य को इस समिति को कैसे सुपुर्द किया जाये, इसकी योजना बनाने में मदद मिली।

भाई रमाकांत अग्रवाल और भाई रावरकर ने समिति के सदस्यों के रूप में काम करने के अपने अनुभव को बाँटा।

सोलापुर आश्रम

सोलापुर, महाराष्ट्र में, अक्कलकोट सडक पर, शहर से ५ किमी दूर २९ मई २००८ को १.५ एकड जमीन खरीदी गयी थी। १५ अप्रैल २००९ को शुरुआत के निर्माण के लिये भूमि पूजन किया गया। प्राथमिक निर्माण में–चारों तरफ़ बेडा लगाना, बिजली और पानी की सुविधा, चौकीदार के लिये घर और अन्य सुविधायें शामिल थीं। उत्सुक और उत्साहित अभ्यासी सुबह ६ बजे से ही आश्रम की जमीन पर एकत्रित हो गये थे। सत्संग शाम साढे छ: बजे हुआ जिसमें लगभग ६० अभ्यासियों ने भाग लिया। अभ्यासी, आश्रम की जमीन पर कठोर परिश्रम करने का अवसर पाकर काफ़ी प्रसन्न थे। क्योंकि उन्हें, जमीन को एक स्तर में करने, पौधे लगाने और जमीन को विकसित करने जैसे आवश्यक अन्य कार्य करने का मौका प्राप्त हो रहा था।

कर्नाटक, दक्षिण क्षेत्र

क्षेत्र प्रभारी भाई शरत हेगड़े समेत तीन प्रशिक्षकों का एक दल दक्षिण कर्नाटक के मालनाड क्षेत्र के उभरते हुए केन्द्रों के दौरे पर गया। उन्होंने अपना दौरा २७ मार्च को कर्नाटक के नव वर्ष उगादि के दिन शुरू किया और रास्ते में तुम्कुर और तिप्तूर में रुके, जहाँ हमारे आश्रम हैं । जब यह दल कादुर पहुँचा तो एक परिवार को देख कर आश्चर्यचकित हो गया जिसके सदस्य कई वर्षों से अपने केंन्द्र में बिना किसी प्रशिक्षक के, मालिक के ऊपर निर्भर रहकर अपनी साधना कर रहे हैं। यह अभ्यासी परिवार रविवार का सत्संग करने के लिये ४० से ७० किमी की यात्रा करता है और कभी–कभी ही व्यक्तिगत सिटिंग ले पाता है। इन अभ्यासी के बूढ़े पिता का, जीवन के प्रति सकारात्मक नज़रिया देख कर आश्चर्य होता है जो नेत्रहीन होने के बाद भी एक छोटी सी दुकान खुद चलाते हैं।

शिमोगा में रात बिताने के बाद यह दल होसंगारा के लिये निकल गया, जहाँ मालनाद के जंगल और भी सघन हो जाते हैं। भाई अनन्तराम के परिवार ने सिटिंग ली। पास के एक छोटे गाँव हुम्चा की एक बहन ने दल से उनके यहाँ आने के लिये विनती की। वह प्रशिक्षकों को देख कर अत्यन्त खुश थी और उन्होंने अपने तीन महीने की साधना में अपने अन्दर आये परिवर्तनों के बारे में दल को बताया। उन्होंने मालिक को देखने की इच्छा भी व्यक्त की। इसके बाद दल इस क्षेत्र के अन्य छोटे केन्द्रों–तीर्थाहल्ली और कोप्पा गया और बाद में शाम को चिकमंगलूर पहुँचा।

अन्तिम दिन की शुरुआत चिकमंगलूर में सत्संग से हुई। हासन में अभ्यासियों के एक छोटे समूह से मिलने के बाद यह दल बैंगलूर पहुँचा।

पिछले दो महीने में, पूरे देश के अनेक केन्द्रों में कई प्रशिक्षण कार्यक्रम और बातचीत के सत्र आयोजित किये गये। यह कार्यक्रम प्रत्येक केन्द्र की आवश्यकता के अनुसार हैं और अभ्यासियों को स्वयं को प्रशिक्षित करने और पद्दति को नये तरीके से समझने का अवसर प्रदान करते हैं।

९ फरवरी को रानीखेत केन्द्र ने युवकों के लिये 'मालिक के साथ संबंध' विषय पर आधारित एक कार्यक्रम आयोजित किया। प्रत्याशियों ने अपना परिचय दिया और बताया कि क्या चीज उन्हें मालिक से जोडती है। सभी ने एक खेल खेला जिसमें उनसे सहज मार्ग के विभिन्न पक्षों और साधना से संबंधित २० प्रश्न पूछे गये। इस कार्यक्रम ने सहज मार्ग को बेहतर तरीके से समझने में अभ्यासियों की मदद की।

उत्तराखण्ड के पिथोरागढ़ केन्द्र के नये अभ्यासियों के लिये १० और ११ मार्च को दो दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अभ्यासियों ने बडी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत सहज मार्ग के परिचय, प्रार्थना, ध्यान और सफाई से हुई। इसके बाद चरित्र निर्माण, समाज में अभ्यासी की भूमिका, जनता में सहज मार्ग के प्रति जागरूकता जैसे विषयों पर एक कार्यशाला हुई। दूसरे दिन गरु की भूमिका, भाईचारा और सतत स्मरण जैसे विषयों पर चर्चा हुई। बाद में अभ्यासियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम से हुई उपलब्धियों का स्वयं ही आंकलन किया। सभी ने रात्रि ९ बजे की सार्वभौमिक प्रार्थना बिना भूले करने का निर्णय लिया।

काशीपुर केन्द्र ने १५ फरवरी को नये अभ्यासियों के लिये एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। लगभग ६० से ज्यादा अभ्यासियों ने कार्यक्रम में भाग लिया जिसका उद्देश्य नये अभ्यासियों को साधना के बारे में गहराई से समझाना था। कार्यक्रम में मूलभूत सहज मार्ग अभ्यास– प्रार्थना, ध्यान और सफाई पर वार्ता शामिल थी। वार्ता के बाद एक प्रश्नोत्तर सत्र हुआ। दूसरे सत्र– सतत स्मरण में लगभग ५० अभ्यासी शामिल हुए। सतत स्मरण पर वार्ता ने प्रत्याशियों को 'सोचने' और 'सतत स्मरण ' में अन्तर समझने का मौका दिया। प्रशनोत्तर सत्र ने अभ्यासियों को खुलने में मदद की।

२९ मार्च को ग्वालियर से ७० किमी दूर दातिया केन्द्र ने एक कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें १० अभ्यासियों ने भाग लिया। कार्यशाला का विषय था "कैसे मैं केन्द्र के विकास में मदद कर सकता हूँ।" सत्र के अन्त में यह निर्णय हुआ कि सतत–स्मरण में रहते हुए स्वयंसेवी कार्य करके हम दूसरों को भी प्रोत्साहित कर सकते हैं और इससे मिशन के विकास में मदद करते हैं। दान देना भी एक प्रकार से मालिक के प्रति अपनी कृतज्ञता जाहिर करना है।

ग्वालियर के पास शिवपुरी नाम के एक दूसरे केन्द्र ने २२ मार्च को एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें २३ अभ्यासियों ने भाग लिया जो रविवार के सत्संग में नियमित रूप से भाग नहीं लेते हैं। यह पाया गया कि अभ्यासियों में अनुशासन की कमी का मुख्य कारण उनमें साधना की गलत समझ है। प्रशिक्षकों ने सभी प्रत्याशियों से मुलाकात की और उनके प्रश्नों के उत्तर दिये। मालिक की कृपा से १० अभ्यासियों ने पुन: साधना शुरू की।

यह महसूस किया गया कि नये अभ्यासियों को ६ या इससे ज्यादा महीनों तक अधिक समय तक ध्यान देना चाहिये जिससे कि वे साधना को ठीक प्रकार से समझ सकें और साधना में नियमित हो जायें।

फरवरी में मालिक के दौरे के बाद, इन्दौर केन्द्र ने नये अभ्यासियों के लिये एक कार्यक्रम आयोजित किया। सत्र के दौरान साधना के विभिन्न पहलुओं और सहज मार्ग के सिद्धान्तों पर व्यापक चर्चा हुई। इसमें नये और पुराने अभ्यासियों के बीच में भरपूर बातचीत हुई।

जयपुर में १५ मार्च को नये अभ्यासियों के लिये मारवाडी भाषा में आधे दिन का कार्यक्रम हुआ। सत्र की शुरुआत अभ्यासियों के परिचय से हुई। मूलभूत विषयों जैसे ध्यान, सफाई और प्रार्थना भी शामिल किये गये और प्रत्येक वार्ता के बाद प्रश्नोत्तर सत्र किया गया। यह पहला मौका था जब स्थानीय भाषा में ऐसे कार्यक्रम का आयोजन किया गया हो। आसपास के गाँवों के अभ्यासियों ने इसमें भाग लिया और कार्यक्रम की प्रशंसा की, क्योंकि वे साधना के मूलभूत पहलुओं को अपनी भाषा में समझने में सक्षम हो पायें। लगभग ३० अभ्यासियों ने कार्यक्रम में भाग लिया और हर दो–तीन महीनों में ऐसे ही कार्यक्रमों को आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की।

9 अप्रैल को काशापुर केंद्र ने एक ओपन हाउस का आयोजन किया जिसमें करीब 30 लोगों ने भाग लिया। इसमें अस्तित्व का वास्तविक उद्देश्य, मनस को नियन्त्रित करने की आवश्यकता, संतुलित अस्तित्व की आवश्यकता आदि विषयों पर वार्तायें हुई। वार्ताओं के बाद एक अनौपचारिक प्रश्नोत्तर सत्र हुआ। ओपन हाउस काफी प्रभावशाली पाया गया क्योंकि श्रोतागण उससे सम्बन्धित काफी प्रश्न पूछ रहे थे जिसका आयोजकों ने बहुत उत्साहपूर्वक उत्तर दिया।

21 मार्च को बंगलोर के परमधाम में एक ओपन हाउस का आयोजन हुआ। नवम्बर 2008 में इस आश्रम के उद्घाटन के बाद यह इस आश्रम का पहला सार्वजनिक जनसमारोह था। निमन्त्रण पत्र एक सप्ताह पहले ही बाँट दिये गये थे जिसके परिणामस्वरूप 80 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम की शुरुआत भाई सुब्रमनियम संकरन की ध्यान की आवश्यकता पर एक परिचयात्मक वार्ता से हुई। इसके बाद प्रतिभागियों को 10 मिनट तक साधारण रुप से अपनी आँखे बंद रखने को कहा गया। मालिक की वार्ता की एक डी वी डी भी चलाई गई जिसका विषय था 'प्रतिदिन के अमरीकी जीवन में ध्यान और अध्यात्मिकता'(मेडिटेशन एन्ड स्प्रीचुएलिटी इन डेली अमेंरिकन लाइफ़)। इसके बाद भाई सुब्रमनियम ने विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देते हुये सहज मार्ग के अनुसार ध्यान पर सविस्तार व्याख्या दी। सहभागियों कों छोटें–छोटें समुह में बाटाँ गया ताकि सहभागियों व अभ्यासियों के बीच परस्पर बातचीत के द्वारा उनकी शंकाओं का समाधान हो सके। कार्यक्रम के अंत तक काफी लोगों ने ध्यान शुरु करने की इच्छा ज़ाहिर की।

गुलबर्गा के पूज्य दोड्प्पा अप्पा इंजीनियरिंग कालेज में 9 मार्च को एक ओपन हाउस का आयोजन किया गया जिसमे करीब 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया। डा. भाई गजेन्द्र सिंह ने मनस नियंत्रण के द्वारा आत्म पूर्णता पर, जोकि उस दिन का विषय था, पर एक वार्ता और पावर पाइंट की प्रस्तुति दी। पूरे समय वातावरण में पूर्ण शान्ति के साथ गहन प्राणाहुति का अनुभव हुआ। एक छोटे से प्रश्नोत्तर सत्र के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ। 5 विद्यार्थियों ने इसमें काफी रुचि दिखाई।

12 तारीख को हुबली केन्द्र में एस बी एम ओफ़िसर्स क्लब में एक ओपन हाउस का आयोजन हुआ जिसमें ध्यान के लाभ के बारें में बताने का अवसर प्राप्त हुआ। भाई जी. एस. कामत और बहन गीता कामत ने मिशन के बारे में बताया और ध्यान के द्वारा तनाव कम करने जैसे विषयों पर वार्ताए दी। सहभागियों ने काफी उत्साहपूर्वक मूलभूत किताबें खरीदी।

मुम्बई

7 तारीख को सेन्ट्रल रेलवे इलेक्ट्रीकल ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, मुम्बई में एक आधे दिन की कार्यशाला का आयोजन हुआ ताकि प्रशिक्षुओं को सहज मार्ग पद्दति के अनुसार ध्यान के बारे में बताया जा सकें। इस कार्यक्रम में संस्थान के 80 प्रशिक्षुओं व दूसरे कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। भाई तुषार प्रधान ने हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में ध्यान और अध्यात्मिकता की आवश्यकता के बारे में बताया। भाई विश्वास टिल्लू ने सहज मार्ग साधना, इसके विभिन्न पहलू और किस प्रकार प्राणाहुति मनुष्य परिवर्तन में मद्द करती है, जैसे विषयों पर वार्ता दी। भाई श्रीधर थोडा ने एक छोटा सा वीडियों का भाग चलाया जिसमें मालिक, सहज मार्ग के बारें में नयें अभ्यासियों से बात कर रहें थे। इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र हुआ।

यहाँ श्रोतागण देश के सभी कोनें से आये हुयें थे इसीलिये उन्हें स्थानीय प्रशिक्षकों की सम्पर्क सूचना दी गई। ताकि आगे की जानकारी के लिये उन्हें सुविधा हो। इन्स्टीट्यूट के अधिकारियों ने अनुरोध किया कि वह ऐसी कार्यशाला का आयोजन हर महीने आने वाले प्रशिक्षुओं के बैच के लिये नियमित रूप से करें।

रुड़की

29 मार्च 2009 को रुड़की आश्रम में एक ओपन हाउस का आयोजन हुआ। शहर के मुख्य स्थलों पर बैनर लगाने के साथ साथ अभ्यासियों ने अपने मित्रों और रिश्तेदारों को निमन्त्रण पत्र भी बाँटें। लगभग 150 लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। भाई ज्ञानेश्वर सरीन और बहन छबि ने श्रोतागण को सम्बोंधित करते हुये उनके प्रश्नों के उत्तर दिये। सत्र के बाद दोपहर का खाना था। यह देखकर काफी खुशी हो रही थी कि श्रोतागण लीन थे और अभ्यास को कैसे शुरु करें, यह जानने के लिये काफी इच्छुक थे। कई स्थानीय समाचार पत्रों ने भी भारी बारिश के बावजूद भी इस जनसमूह के एकत्रित होने की खबर के बारें में छापा।

सोनवाडी, महाराष्ट्र

24 फ़रवरी को महाराष्ट्र के सोनवाडी(ओरंगाबाद) में नये अभ्यासियों के लिये एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे सोनवाडी व लासूर के लगभग 40 अभ्यासियों ने भाग लिया। सुबह के सत्र का आरम्भ भाई गिर्गे की वार्ता से हुआ जिसमें उन्होंने सहज मार्ग का आधार व प्रार्थना और ध्यान जैसे विषयों पर भाषण दिया। उसके बाद भाई चौहान व भाई चिते ने भाईचारा व राजयोग पर एक के बाद एक वार्तायें दी। खानें के बाद सोनवाडी के स्थानीय लोगों के लिये एक ओपन हाउस का आयोजन हुआ जिसमें सहज मार्ग पद्दति के अनुसार ध्यान के बारें में सहभागियों को बताया गया। कुछ अभ्यासियों ने अपने अनुभव को सबके साथ बाँटा और उन्होंने अपने अन्दर जो बदलाव महसूस किये, उसे भी बताया। सबकी सुविधा के लिये कार्यक्रम को हिन्दी और मराठी में आयोजित किया गया। सोनवाडी पाठशाला जो एक स्थानीय स्कूल है, उसके बच्चों के लिये भी मूल्याधारित शिक्षा पर एक घंटे का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शाम को 6 बजें के सतसंग के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

आन्ध्र प्रदेश, दक्षिण क्षेत्र

भाई ए पी दुरई (जनरल सेक्रेटरी) और भाई गंगाधर (क्षेत्र प्रभारी) १९ फरवरी को येम्मीगानुर और कर्नूल के दौरे पर गये। भाई ए पी दुरई ने येम्मीगानुर में लगभग ४० अभ्यासियों के लिये सत्संग कराया। वे इस शहर में भाई गंगाधर के परिवार द्वारा चलाये जा रहे इंग्लिश मीडियम हाई स्कूल भी गये। वहाँ एन सी सी की लड़कियों की एक टोली और स्कूल की चुस्त वर्दी में ९०० छात्र थे । भाई दुरई ने उनकी परेड और सामूहिक सभा की गतिविधियों का मुआयना किया। उन्होंने विद्यार्थियों के काम में आने योग्य, मालिक की शिक्षाओं के बारे में बताया जिसे सभी ने ध्यान से सुना। स्कूल में सभी विद्यार्थियों के लिये वी बी एस ई की गतिविधियों को मिशन की प्रार्थना से शुरू करने का निर्णय लिया गया। इसके बाद भाई दुरई ने भाई गंगाधर के पुरखों के घर में चल रहे स्कूल में गये जहाँ १२० गरीब बच्चें मुफ्त शिक्षा और भोजन प्राप्त कर रहे हैं। करनूल में उन्होंने करीब १८० अभ्यासियों को सत्संग कराया और दोपहर का भोजन के बाद एक प्रश्नोत्तर सत्र हुआ जिसमें उन्होंने प्रश्न पूछे और अभ्यासियों के प्रश्नों का स्पष्टीकरण किया। शाम के सत्संग में २८० अभ्यासी शामिल हुए। प्रश्नोत्तर का एक और सत्र हुआ जिसमें अभ्यासियों के प्रश्नों के उत्तर मालिक की शिक्षाओं पर आधारित थें। अनेक विषयों जैसे कि मालिक/प्रशिक्षकों से सम्बंध, सांसारिक जीवन की समस्याओं और दुख–दर्द को देखने का नज़रिया, स्वयंसेवी–कार्य, बाल–केन्द्र, मिशन की प्रमुख किताबें, प्रत्येक महीने के पूर्ण दिवस कार्यक्रम की योजना, पर चर्चा हुई। अभ्यासियों ने इस आधे दिन के कार्यक्रम में बहुत उत्साह से भाग लिया।

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम, मुम्बई

मुम्बई में अनेक स्थानों पर नये अभ्यासियों के लिये हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त प्रतिक्रिया से उत्साहित होकर अभ्यासियों के लिये एक बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता महसूस हुई। २१ और २२ फरवरी को पनवेल के बाबूजी मेमोरियल आश्रम मे दो दिन का मूलभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में ४० अभ्यासियों ने भाग लिया जिनमें से दो मालेगाँव से थे।

१८ और १९ फरवरी २००९ को मालिक की मुम्बई यात्रा ने अभ्यासियों में नया जोश भर दिया। और दिव्य आनन्द से भरे सतसंग के साथ २१ फरवरी से प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत हुई । पहले दिन साधना की मूलभूत धारणा पर विचार किया गया।

पहले दिन साधना के मूलभूत तत्वों के बारें में बताया गया। सत्र का आयोजन हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ किया गया ताकि अभ्यासियों को साधना के सभी पहलू ठीक प्रकार से समझ में आयें।
जीवन के ध्येय, रास्ते और साधन और गुरु पर सामूहिक चर्चा हुई। प्रत्याशियों ने कार्यक्रम की शुरूआत 'सत्य का उदय' पढ कर की, जिससे चर्चा और भी रोचक और लम्बी हो गयी क्योंकि सभी के सोचने का तरीका एक था। इसके बाद 'मास्टर, मिशन और डायरी लेखन' पर प्रस्तुति दी गयी। अभ्यासियों ने अपने खाली समय में स्वयंसेवी कार्य किये और डायरी लिखी तथा दिनभर की शिक्षा को आत्मसात किया।

दूसरे दिन की शुरूआत सत्संग से हुई और उसके बाद सतत स्मरण, ध्येय और तेज प्रगति के तरीकों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम का समापन सहज मार्ग के दस नियमों पर चर्चा से हुआ।

बाल–समूह, मुम्बई

१० से १२ अप्रैल २००९ को सहज बाल कैम्प में ५३ बच्चों ने भाग लिया। यह कैम्प ९ से १३ वर्ष की उम्र के बच्चों के लिये था। मालिक की यात्रा से उत्साहित स्वयंसेवियों ने मूल्य–आधारित और मस्ती से भरपूर गतिविधियों से भरे कार्यक्रम का आयोजन किया।

बच्चों को ६ समूहों में बाँटा गया था– प्रेम, धैर्य, सहनशीलता, दृढ़ता, खुशी और साहस। अपने गंतव्य पर कैसे पहुँचें इस पर बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने के लिये रेलवे समय–तालिका पर आधारित एक गतिविधि तैयार की गयी। दोपहर के भोजन के बाद का समय बच्चों के लिये, वायु–घन्टी बनाकर अपनी सृजनता दिखाने का था। उन्होंने अपना सैंडविच खुद बनाकर खाया। सत्र का समापन कहानी पढकर और खो–खो खेल कर हुआ। रात के भोजन के बाद बच्चों को टेलिस्कोप से तारे दिखाने के लिये छत पर ले जाया गया।

११ अप्रैल को बच्चों का योग सत्र हुआ। इसके बाद व्यवसायिक लोगों की सहायता द्वारा छत से जमीन पर रस्सी के जरिये नीचे आने का रोमंचक और आनन्ददायी अनुभव उन्होंने लिया। दोपहर के खाने के बाद रस्सी से उतरने का अनुभव लिखना और वस्तु हस्तान्तरण का खेल खेला गया। उसके बाद जीवन के मूल्यों पर प्रकाश डालते हुयें एक पावर प्वाइंट की सजीव प्रस्तुति को बच्चों ने पूरे ध्यान और एकाग्रता से देखा। छत पर ताजगी प्रदान करने वाला एक संगीत का कार्यक्रम हुआ और उसके बाद एक छोटी सी फिल्म दिखायी गयी।

रविवार की सुबह को बच्चे हरित–क्षेत्र गये और प्राकृतिक सुन्दरता को सराहना सीखें। इसके बाद मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा पर आधारित कुछ वैज्ञानिक प्रयोग जैसे जरूरत और चाह आदि पर खेल। इसके बाद बच्चों ने चार चरणों (सामान्य ज्ञान, विज्ञान, पौराणिक कथायें, सहज मार्ग के मूल तत्व) में एक प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लिया। दोपहर के भोजन के बाद एक घन्टें का सत्र सिर्फ माता–पिता के लिये था। इसके साथ ही इस कैम्प का समापन हो गया।

रायचुर आश्रम, कर्नाटक

पूज्य श्री बाबूजी महाराज को भेंट कियें गये भूमि के इस टुकडे पर स्थित रायचुर का यह आश्रम (ध्यान कक्ष परिसर) मिशन की शुरु की रचनाओं में से एक है। यह नगर के बीच में स्थित है और इसमें 200 अभ्यासियों के ठहरने की सारी बुनियादी सुविधायें उपलब्ध है। गुलबर्गा के शिल्पकार श्री एल. टी. चवान के अनुसार – सामने का भाग उठे हुए हाथ के प्रतीक को दर्शाता है जो हमारे आध्यात्मिक ध्येय और "अनन्त की ओर" हमारी यात्रा की ओर सकेंत करता है।

16 जनवरी 1970 को पूज्य श्री बाबूजी महाराज द्वारा किए गए शिलान्यास के साथ ही यह आश्रम एक विशेष कृपा से भरा प्रतीत होता है।

यह आश्रम लगभग 28300 वर्ग फ़ीट (195' X 145') भूमि पर खड़ा है । इसका न्याधार क्षेत्र लगभग 140' X 100' है और इसका निर्माण, जरूरतों और साधनों की उपलब्धता के अनुसार कई चरणों मे हुआ है। यह आश्रम मजबूत काले पत्थर से बना है और अहाते के चारों तरफ एक मजबूत दीवार इसे पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती है।

यह आश्रम सन् 70 में शायद मिशन की कुछ बडी जगहों में से एक था। इसमें 70' X 30' का एक बड़ा ध्यान–कक्ष है। जो कहा जाता है कि प्री–स्ट्रेस्ड बीम से निर्मित है। तथा अपने आप में अनूठा, तकनीकी रूप से मजबूत और दरार प्रतिरोधक है। हॉल में एक तरफ़ एक ऊँचा मंच है और दूसरी तरफ़ ऊपर की ओर एक अद्वितीय बालकनी है। आश्रम में कई कमरें और एक शयनागार भी है। फ़िलहाल, शयनागार को गुरुदेव के कमरे के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है जिससे जुड़ा एक स्नानगृह और गुरुदेव के विशेष प्रयोग के लिए एक छोटा भोजन कक्ष है।

रसोईघर के साथ एक अलग भोजन–कक्ष है और किसी बड़े उत्सव में खाना बनाने के लिए बाहर काफ़ी जगह भी है। भाईयों और बहनों के लिए अलग–अलग शोचालय ब्लॉक है।

आश्रम, सामने और चारों तरफ से घास के मैदान और बगीचे से सुसज्जित है। पिछवाड़े में खुले स्थान में भोजन करने या भविष्य में आश्रम के विस्तार करने के लिए काफ़ी जगह है।

यह आश्रम रायचूर में मानिक प्रभू मंदिर पथ पर एल.वी.डी. कॉलेज के पास स्थित है। यह शहर, रेल और बस सेवा से भलीभाँति जुड़ा हुआ होने के कारण यहाँ आवागमन सुविधाजनक है क्योंकि यह मुम्बई– चेन्नई और बंगलोर– मुम्बई रेल–मार्ग पर पड़ता है। यह बस स्टैंड और रेलवे स्टेशन से लगभग 4 कि.मी. दूर है और इसके चारों तरफ कई शिक्षण संस्थान है।

इस आश्रम में लगातार कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और भंडारों का आयोजन होता रहा है।

जम्मू और कश्मीर में रजिस्ट्रेशन

हमें यह सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि उनके आशीर्वाद से "श्री राम चन्द्र मिशन, जम्मू और कश्मीर" एक सोसाईटी के रूप में जम्मू और कश्मीर राज्य मे पंजीकृत हो गया है।

स्प्रीचुअल हाइरार्की पब्लिकेशन ट्रस्ट

निम्नलिखित ट्रस्टियों के साथ पंजीकृत हुआ है।
विजय कुमार भट्टर मैनेजिंग ट्रस्टी
राजेश राठौड़ सचिव
प्रवीन दगदी कोषाध्यक्ष
सन्तोष कुमार कांजी ट्रस्टी
उमा प्रभु ट्रस्टी

एस.आर.सी.एम. और एस.एम.एस.एफ़ दोनों ने प्रकाशन का कार्य 31 मार्च 2009 से बंद कर दिया है। यह नयी संस्था, स्प्रीचुअल हाइरार्की पब्लिकेशन ट्रस्ट, अब से मिशन और फ़ाउंडेशन के लाईसेंस के तहत सभी प्रकाशन का भार संभालेगी।

To subscribe to this Newsletter please visit http://www.srcm.org/centers/as/in/newsletter/index.jsp
For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.
This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM.